JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कहानी वाड्चू – भीष्म साहनी

मुकेश सैनी

शोधार्थी

महर्षि दयानंद सरस्वती

विश्वविद्यालय अजमेर राज.

कहानी का प्रारंभिक परिचय :– भीष्म साहनी की कहानी वाड्चू भारत– चीन संबंधों पर लिखी गई है। इस कहानी में भारत–चीन संबंधों का तत्काल एक घटनाक्रम दिया गया। यह कहानी सन 1978 में प्रकाशित हुई। वाड्चू जो एक बौद्ध भिक्षु है वह चीन का रहने वाला है और अपनी ज्ञान पिपासा शांत करने के लिए भारत के विभिन्न पवित्र बौद्ध स्थलों का भ्रमण करता है। वाड्चू एक वृद्ध प्रोफेसर तान–शान के साथ भारत आया था। प्रोफेसर तो वापस चीन चले गए लेकिन वांड्चू भारत में रुक गया। यहां उसने हिंदी – अंग्रेजी भाषा का अध्ययन किया। वह बनारस, दिल्ली ,कोलकाता, सारनाथ आदि स्थलों पर गया तथा वहां बौद्ध धर्म को जानने की कोशिश की। भारत–चीन मैं समय–समय पर बदलती परिस्थितियों का सामना कैसे वांड्चू ने किया यह भी दिखाया गया है। कहानी के मध्य में नीलम वाड्चू का आपस में प्रेम–लगाव भी प्रस्फुटित होता है।

वाड्चू की वेशभूषा– उसने धूसर रंग का चोगा पहन रखा था। दूर से देखने पर पता चलता है जैसे बौद्ध भिक्षुओं का सिर मुंडा हुआ होता है, वैसा ही उसका है। लेखक ने जब उसके साथ मजाक किया था मुस्कुराया तो उसकी टेढ़ी सी मुस्कान आ गयी, जिसे लेखक की मौसेरी बहन नीलम ने डेट दांत की मुस्कान कहा था; जिसका कारण था वांगचुक मुस्कुराते समय उसका ऊपर का होंठ केवल एक और थोड़ा सा ऊपर उठता था।

वाड्चू स्वभाव व व्यवहार यायावर प्रवृत्ति – चीन से आया था, उसने बौद्ध धर्म को तथा उसके पवित्र स्थल को जानने की जिज्ञासा थी। भग्न मूर्तियों को देखकर वह सासा भावुक हो जाता था। महाप्राण (भगवान बुद्ध) के पैरों के स्मरण मात्र से उसकी धड़कन उसके हाथ का हल्का सा कंपन धड़कते दिल की तरह महसूस हो रहा है जाहिर सी बात है कि उसे बोधिसत्व के पैर देखकर उसे महाप्राण के पैर याद आ गए। वाड्चू बौद्ध भिक्षु भारत में मतवाला बनकर घूम रहा था। वह महाप्राण के जन्म स्थल लुंबिनी की यात्रा नंगे पांव ही कर चुका था। और वह भी पूरे रास्ते

हाथ जोड़कर जिस जिस दिशा में महाप्राण के चरण उठे थे, मंत्रमुग्ध होता हुआ उसी दिशा में घूम रहा था। जब वाड्चू सारनाथ में था जहां महाप्राण ने अपना पहला प्रवचन दिया, वहां एक पीपल के पेड़ के नीचे कई घंटों नतमस्तक बैठा था, उसे ऐसा लग रहा था जैसे महाप्राण उसे पहला प्रवचन सुना रहे हो। वाड्चू श्रीनगर गया तो सोचता वह कहता इन्हीं बर्फ की ढकी पहाड़ियों की चोटियों से रास्ता ल्हासा को जाता है और इसी रास्ते बौद्ध– ग्रंथ तिब्बत भेजे गए थे। वह भारत में खोज करने नहीं आया था। अपितु वह तो बौद्ध मूर्तियों को देखकर गदगद होने आया था। वह भक्त अधिक जिज्ञासु कम था। वाड्चू के व्यवहार पर दोस्तों के प्रश्न – लेखक के दोस्तों ने वाड्चू के व्यवहार पर अनेक प्रश्नों प्रश्न किए, एक कह रहा था 'यार, किस बूदम को उठा लाए हो? यह क्या चीज है? कहां से पकड़ लाए हो?' लेखक में कहा 'यार यह भारत का नहीं, बाहर का रहने वाला है, इसे हमारे कामों में रुचि कैसे होगी। दूसरे मित्र ने पूछा 'यार यह न बोलता है न ही चाहकता है। उसके चेहरे – मोहरे को देखकर तो पता ही नहीं चलता यह हंस रहा है या रो रहा है। पूरा दिन एक कोने में दुबक कर बैठा रहता है। लेखक ने कहा कि मेरी नजर में इस बात का बड़ा महत्व है कि वांड्चू बौद्ध धर्म ग्रंथ वांगचुक बाचता है और उससे बाचने के लिए इतनी दूर से आया है। यह भारत का वर्तमान देखकर नहीं आया है, इसे तो भारत का अतीत खींच लाया है।

विदेशियों की पसंद भारत भूमि– लेखक के दोस्त अजय ने कहा कि वाड्चू भारत में 5 वर्ष से रह रहा है, शायद पूरी जिंदगी यही काटेगा वे आगे कहते हैं कि वाड्चू अब आ गया है, अब वापस नहीं लौटेगा, भारत में एक बार विदेशी आ जाए, तो लौटने का नाम नहीं लेता है। एक ने कहा भारत देश दलदल के समान है जिसमें किसी बाहर के व्यक्ति का एक बार पैर पड़ जाए, तो वह धंसता ही चला जाता है, यदि वह चाहकर निकालना भी चाहे तो नहीं निकल सकता है। दिलीप ने आगे मजाक में एक बात कह दी की 'न जाने कौन– से फूल तोड़ने के लिए इस दलदल में घुसा है।' लेखक ने कहा हमारा देश भारत वासियों को तो पसंद है लेकिन बाहर के लोगों को बहुत पसंद है।

चाऊ – एन– लाई का भारत आगमन– लेखक की वाड्चू से मुलाकात दिल्ली में हुई । यह वह समय था जब चीन के प्रधानमंत्री चाउ – एन – लाई भारत यात्रा पर आने वाले थे। वांड्चू अपने देश के प्रधानमंत्री के आगमन पर वह स्वयं सारनाथ से दिल्ली चला गया। लेकिन दिल्ली में उसके आने का कारण अनुदान प्राप्त करना था। लेखक उसे समझता है कि भारत–चीन संबंधों के बंद द्वार अब खुले रहे हैं। दोनों के बीच संपर्क अब पुनर्स्थापित हो रहे हैं। अब तुम्हारे खर्चे का बंदोबस्त तुम्हारी सरकार करेगी। तुम्हें भारत में प्रवास करते 15 वर्ष बीत चुके हैं। तुम हिंदी – अंग्रेजी भाषाएं जानते हो, साथ ही साथ बौद्ध धर्म ग्रंथों का अध्ययन कर रहे हो, तुम दोनों देशों के सांस्कृतिक संपर्क में एक बहुमूल्य कड़ी बन सकते हो. . . . . .।

वाड्चू से बौद्ध धर्म व भारत की विदेश नीति के बारे में पूछताछ–

चीन में रहते, धीरे–धीरे वातावरण में तनाव सा आने लगा। एक बार वाड्चू को पूछताछ के लिए स्थानीय ग्राम प्रशासन केंद्र लाया गया। वहां उससे भारत प्रवास के बारे में प्रश्न करने लगे। 'तुम भारत में कितने साल रहे?, 'वहां पर रहकर क्या करते थे?' 'वहां कहां–कहां घूमे थे?' 'बौद्ध धर्म का भौतिक आधार क्या है?' वाड्चू ने उक्त प्रश्नों के उत्तर दें तथा वह बौद्ध धर्म के 8 उपदेशों की व्याख्या करने लगा। फिर एक व्यक्ति ने पूछा कि 'भारत की विदेश नीति के बारे में तुम क्या सोचते हो?' वांड्चू ने उत्तर दिया, आप जैसे श्रेष्ठ व्यक्ति इस संबंध में ज्यादा जानते हैं। मैं तो एक साधारण बौद्ध धर्म को जानने वाला एक उत्सुक व्यक्ति हूं।

पर भारत बड़ा प्राचीन देश है। भारत की संस्कृति शांति तथा मानवीय सद्भावना की संस्कृति है। वाङ्चू से अगला प्रश्न किया गया, 'नेहरू के बारे में तुम क्या जानो सोचते हो?' उसने उत्तर दिया कि 'मैंने जवाहरलाल नेहरू को तीन बार देखा है।'

वाङ्चू का वापस भारत लौटना– जिस दिन वाङ्चू कोलकाता पहुंचा, उसी दिन भारतीय व चीनी सैनिकों के बीच झड़प हो गई थी और उसमें दस भारतीय सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए। इस घटना के बाद लोग उसे घूमकर देख रहे थे। कलकत्ता स्टेशन पर पहुंचने के बाद दो सिपाही उसे पुलिस दफ्तर ले गए वहां उसके पासपोर्ट व कागजों की छानबीन हुई।

भारतीय अधिकारियों ने वाङ्चू से कई तरह के सवाल – जवाब किए। 'दो साल पहले आप चीन गए तो जाने का क्या कारण था।' 'आप वहां पर क्या करते थे?' 'भारत में क्यों आए हो?' उसने उत्तर दिया थोड़े समय के लिए ही गया था। वाङ्चू को भारत में ऐसे स्वागत से थोड़ा अजीब – सा लग रहा था।वाङ्.चू जब रेल के डिब्बे में बैठा तो एक बंगाली मुसाफिर कहने लगे 'या तो कहो कि तुम्हारे देश वालों ने विश्वासघात किया है, नहीं तो हमारे देश से निकल जाओ, निकल जाओ....। वाङ्चू सारनाथ पहुंच गया और एक कोठरी में लगी खिड़की के बाहर पुराना दृश्य वापस उभर कर सामने आ गया । खोया हुआ जीव अपने स्थान पर लौट आया ।

भारत – चीन के मध्य जंग – कुछ दिनों के बाद भारत व चीन के मध्य जंग की शुरुआत हो गई। उसी दिन वाङ्चू को पुलिस हिरासत में ले लिया। इसमें सरकार की मजबूरी भी थी कि दुश्मन देश के नागरिकों पर विशेष नजर रखी जाए, क्योंकि मुखबिर भेदिया हो सकता है या आंतरिक अशांति फैलाने वाला भी हो सकता है। वाङ्चू की पोटली को जप्त कर लिया गया। उस पर सघन निगरानी लगा दी गई। उसमें चीन जाने तथा वापस भारत लौटने से संबंधित प्रश्न पूछे जा रहे थे।

वाङ्चू की मौत – लेखक को वाङ्चू की मौत की खबर एक महीने बाद मिली। मरने से पहले बौद्ध विहार के मंत्री से निवेदन किया था कि उसका छोटा सा ट्रंक (सामान) और गिनी – चुनी किताबें मुझे पहुंचा दी जाए। मंत्री जी ने वांगचु के प्रति सद्भावना के शब्द कहे, 'बड़ा नेक दिल आदमी था, सच्चे अर्थों में बौद्ध भिक्षु था। मेरे दस्तखत करवा कर उन्होंने ट्रंक मेरे हवाले कर दिया, ट्रंक में वाङ्चू का सामान था। सामान लेकर लेखक ज्यों ही बाहर निकला, उसी समय कैंटीन का रसोईया उसी के पीछे – पीछे भागता रहा है। उसने कहा 'बाबू आपको बहुत याद करते थे। मेरे साथ आपकी चर्चा बहुत करते थे। बहुत भले आदमी थे।'

कहानी का निष्कर्ष/ समीक्षा : – वाङ्चू की मौत खामोशी एकांत मृत्यु, मानो दुनिया की सारी मासूमियत, भोलेपन और इंसानियत की मौत है। दो व्यवस्थाएं कटघरे में खड़ी है चीन की तथाकथित **'कम्युनिस्ट व्यवस्था** और भारत की तथाकथित **'लोकतांत्रिक' और कानून** के शासन की व्यवस्था। इसके साथ में दोनों राज – व्यवस्थाओं की निर्मम, कठोर और संवेदना रहित नकारा नौकरशाही तथा उनका खुफिया और पुलिस तंत्र । वाङ्चू की निपट अकेली और दर्दनाक मृत्यु बहुत बड़ा सवाल छोड़ जाती है कि इन दोनों व्यवस्थाओं में, बिना किसी राजनीतिक के, क्या किसी भोलेपन, मासूम और संवेदनशील व्यक्ति को जीने का कोई हक नहीं है। आज जब असहिष्णुता के तेजी से ऊपर चढ़ते जा रहे हैं तापमान और हत्यारे फासिस्ट काले सायों के दौर में, जब अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य को हिंसात्मक दमन से कुचला जा रहा है, तब वाङ्चू की खामोशी धार्मिक आस्था और बौधिसत्वो के प्रति उसकी विलक्षण भाव – विहलता के साथ अपने आप में डूबा रहता है; तो अपने धार्मिक आस्था की सार्वजनिक उद्घोषणा भी नहीं करता। फिर भी किस तरह से उसकी संवेदनशीलता का, उसके

समूचे व्यक्तित्व का उसके किसी का भी रोआ तक न दुखाने वाले मासूमियत से लबालब छलकते अस्तित्व का निर्मम सम्हार किया जाता है। दो व्यवस्थाओं के टकराव और युद्ध के खिलाफ यह एक ऐसी कहानी है जिसकी हिंदी में मुझे कोई दूसरी मिसाल कहीं नहीं दिखती ।

संदर्भ ग्रंथ : –

1.कहानी – वाङ्चू – भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड़ दरियागंज, पहला संस्करण 2016 नई दिल्ली ।

2.भीष्म साहनी – श्याम कश्यप, अध्याय हिंदी कहानी की ग्लोबल परिणीति पे. 212।